

Shannon & Weaver Model of Communication

शैनन एवं वीवर का संचार प्रारूप



Dr. Archana Bharti

Guest Faculty, MJMC

Sem-1, Paper- 101

Date- 28/06/2021



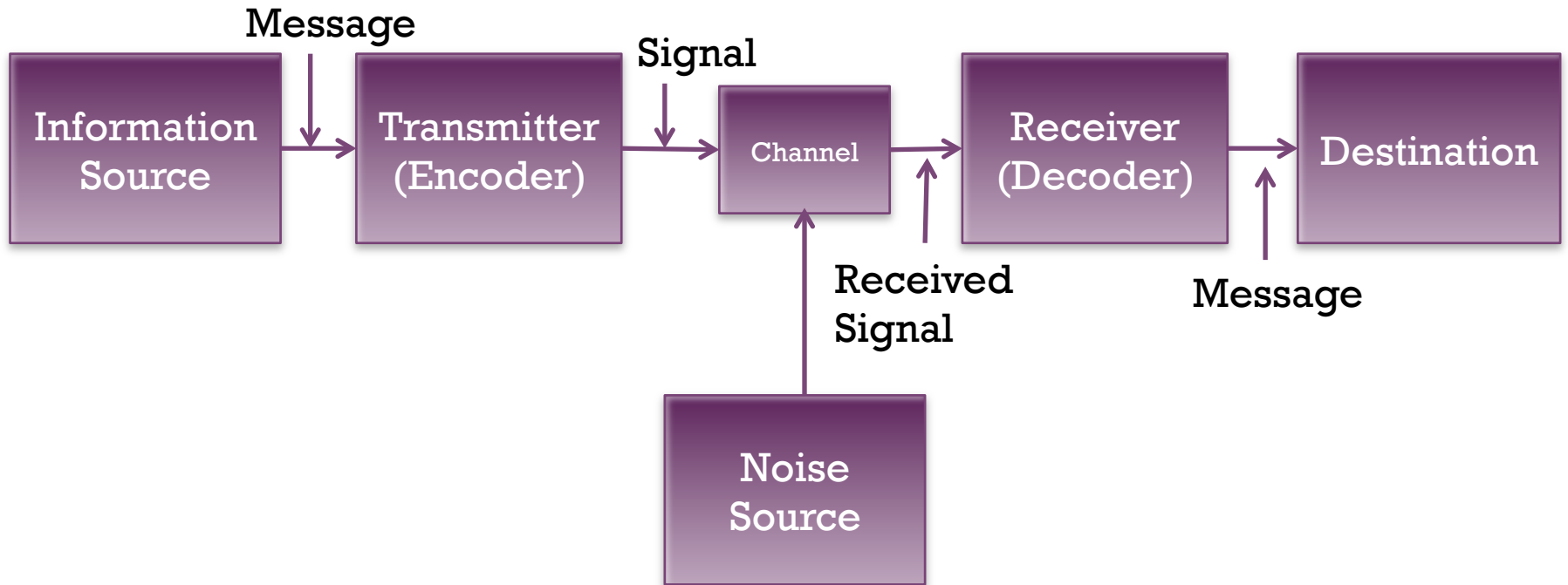
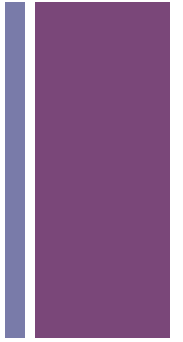
शैन्नन एवं वीवर का संचार प्रारूप

- वर्ष **1949** में **क्लाउड शैन्नन और वारेन वीवर** (Claude Shannon & Warner Weaver) ने अपने प्रतिरूप को प्रस्तुत किया। जिसे गणितीय प्रतिरूप (Mathematical Theory) कहा जाता है।
- शैन्नन और वीवर दोनों अमेरिका की बेल टेलीफोन प्रयोगशाला में अधिकारी के पद पर कार्यरत थे। इन्होंने टेलीफोन से संचार प्रक्रिया के आधार पर एक मॉडल को प्रस्तुत किया था। जो संचार का **गणितीय सिद्धांत** बना। इनके द्वारा प्रतिपादित प्रारूप में मुख्यतः छह तत्वों का उल्लेख किया गया। जिसे आगे रेखाचित्र के माध्यम से समझा जा सकता है।





शैन्न एवं वीवर का संचार प्रारूप





शौनन एवं वीवर का संचार प्रारूप

- शौनन एवं वीवर के संचार प्रारूप में **A** टेलीफोन पर **B** से बात करता है। यहां **A** सूचना स्रोत है। वह अपना संदेश टेलीफोन से प्रेषित करता है। टेलीफोन, ट्रांसमीटर है। **A** का शाब्दिक संदेश ट्रांसमीटर यांत्रिक रूप में संदेश को परिवर्तित कर **B** के टेलीफोन तक पहुंचाता है। यह संदेश फिर शाब्दिक संदेश में परिवर्तित होकर **B** के पास पहुंच जाता है।



शौनन एवं वीवर का संचार प्रारूप

- शौनन एवं वीवर मॉडल के अनुसार संचार की प्रक्रिया में एक "सूचना स्रोत" है उसके पास एक "संदेश" है। वह अपना संदेश एक "ट्रांसमीटर" के माध्यम से भेजता है। ट्रांसमीटर उस संदेश को एक "सिग्नल" अथवा संकेत में बदलकर भेजता है। उस ट्रांसमिटेड सिग्नल को "बाधा" या शोर से होकर गुजरना पड़ता है। इस तरह रिसीवर तक वह संदेश "प्राप्त संकेत" के रूप में पहुंचता है। रिसीवर उस सिग्नल को प्राप्त करता है। रिसीवर सिग्नल को संदेश में बदलकर "गंतव्य स्थल" तक पहुंचा देता है। और गंतव्य स्थल उसे संदेश के रूप में ग्रहण करता है।



शैन्नन एवं वीवर का संचार प्रारूप

- शैन्नन और वीवर ने सूचना सम्प्रेषण की प्रक्रिया में **“शोर”** की अवधारणा को सबसे पहले प्रस्तुत किया। शोर का तात्पर्य संचार मार्ग में आने वाले व्यवधान से है जिसके प्रभाव के कारण संदेश अपने वास्तविक अर्थ में रिसीवर अर्थात् प्रापक तक नहीं पहुंच पाता। यदि सूचना प्रेषक द्वारा प्रेषित संदेश संचार मार्ग से होते हुए अपने वास्तविक रूप में प्रापक तक पहुंच जाता है तो माना जाता है कि संचार मार्ग में कोई बाधा नहीं है। लेकिन शोर के कारण ऐसा नहीं हो पाता। शोर जितना अधिक होगा, संचार उतना कम सफल होगा और शोर जितना कम होगा, संदेश उतना ही बेहतर तरीके से पहुंचेगा और संचार सफल होगा।



शौनन एवं वीवर का संचार प्रारूप

- शौनन और वीवर ने शोर के कारण उत्पन्न होने वाले व्यवधान को कम करने के लिए 'शब्द बहुलता' के सिद्धांत पर जोर दिया। जिसमें किसी संदेश को "बार-बार बोलना" और 'दुहराना' है।
- इनके गणितीय संचार प्रारूप मुख्यतः दो प्रश्नों पर आधारित है। पहला, संचार मार्ग में सम्प्रेषित सूचना को किस प्रकार उसके वास्तविक रूप में प्रापक तक पहुंचाया जाए और दूसरा, संचार मार्ग में शोर के कारण सूचना अथवा संदेश कितना विकृत (Distorted) होती है?
- इनके मॉडल में सबसे बड़ी कमी यह है कि इसमें फीडबैक की बात नहीं गई है। इसलिए इस मॉडल को एक तरफा या एकमार्गी (One way) संचार प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है।

